IJMRSETM

e-ISSN: 2395 - 7639

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

IN SCIENCE, ENGINEERING, TECHNOLOGY AND MANAGEMENT

Volume 8, Issue 9, September 2021

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 7.580

| ISSN: 2395-7639| www.ijmrset.com| Impact Factor: 7.580 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

|| Volume 8, Issue 9, September 2021 ||

|DOI:10.15680/IJMRSETM.2021.0801009|

जनजीवन में नवीन धार्मिक क्रांति

Dr. Pooja Verma

Dept. of Hindi, KSBD PG College, Kanpur, India

सार

छठी शताब्दी ईसा पूर्व को विश्व इतिहास का एक महत्वपूर्ण युग माना जाता है। उस शताब्दी से पहले के समय को पूर्व-ऐतिहासिक युग के रूप में वर्णित किया गया है।छठी शताब्दी ईसा पूर्व से, हालांकि ऐतिहासिक साक्ष्य मौजूद थे।इस प्रकार कि छठी शताब्दी ईसा पूर्व में ऐतिहासिक काल शुरू हुआ यह उस समय के लिए महत्व जोड़ता है।यह ईसा पूर्व छठी शताब्दी में भारत में मानव जाति के दो महान धर्मों के संस्थापक थे। वे जैन धर्म और बौद्ध धर्म के संस्थापक महावीर जीना और गौतम बुद्ध थे। जीना और बुद्ध के बारे में और उनके धर्मों के बारे में पर्याप्त साहित्य लिखा गया। यद्यपि जैन और बौद्ध साहित्य चरित्र में धार्मिक थे, फिर भी उनमें उस समय की राजनीतिक और सामाजिक स्थितियों के बारे में बहुत जानकारी थी। इतिहास उन साहित्यिक स्रोतों से लिखा जा सकता है। का उदय था जैन धर्म और बौद्ध धर्म जिसने छठी शताब्दी ईसा पूर्व को महान और शानदार बना दिया था।यह उस शताब्दी से था कि प्राचीन भारत की राजनीतिक स्थिति स्पष्ट रूप लेने लगी थी। उस समय कई राज्य अस्तित्व में आए। देश के बड़े क्षेत्रों को एकजुट करके बड़े राज्यों के निर्माण का प्रयास भी किया गया। इससे ईसा पूर्व छठी शताब्दी को महत्व मिला

परिचय

6 वीं शताब्दी ईसा पूर्व ने भारत में पुरुषों के मन में एक बड़ी अशांति देखी। यह भारतीय समाज में नएपन और सुधार के लिए एक आध्यात्मिक और धार्मिक जागृति की तरह था। उपदेशक और भटकने वाले भिक्षुओं द्वारा महावीर और बुद्ध की उम्र से पहले एक बदले हुए दृष्टिकोण के लिए मैदान तैयार किए जा रहे थे जिन्होंने मौजूदा धार्मिक परिस्थितियों और सामाजिक व्यवस्था के मूल्य के बारे में संदेह व्यक्त किया था। ऋग-वैदिक काल की पहले की धार्मिक सादगी और सामाजिक समानता अब नहीं थी। बाद के वैदिक समय से, धर्म ने अपने आंतरिक पदार्थ को कभी भी बढ़ती बाहरी प्रथाओं में खो दिया। डोगमा और अनुष्ठान अधिक कठोर हो गए। कई देवी-देवताओं को धार्मिक विश्वास में प्रकट किया गया था। अंधविश्वास ने आध्यात्मिकता को छिन्न-भिन्न कर दिया।पुरोहितों का वर्चस्व पूरी तरह से खत्म हो गया। उन्होंने धार्मिक सोच और पवित्र प्रदर्शन दोनों का एकाधिकार बना लिया। ब्राह्मणवादी वर्चस्व ने धार्मिक खोज के दरवाजे अन्य सामाजिक वर्गों के लिए बंद कर दिए। पहले के युगों की एकता और नैतिकता पशु बलि, कई समारोहों और अर्थहीन प्रथाओं के रूप में अंधे संस्कारों में नष्ट हो गई।जैसे-जैसे धर्म अपनी पूर्व जीवन शक्ति खोता गया, समाज भी अपनी पहले जैसी शक्ति खोता गया। जाति व्यवस्था ने मानव समानता की अवधारणा को नष्ट कर दिया और पुरुषों को वर्गों में विभाजित किया। उप-जातियां संख्या में गुणा करने लगीं।बहुसंख्य पुरुषों के लिए, प्रचलित सामाजिक व्यवस्थाएँ दमनकारी और दर्दनाक थीं।[1] निम्न वर्ग जैसे कि सुदास ने नीचा दिखाया। क्षत्रिय और वैश्य भी, ब्राह्मणों के वर्चस्व से पीड़ित थे, और बाद के लोगों की पसंद को नापसंद करने लगे।

जब बुद्धिमान पुरुषों को वेदों और उपनिषदों जैसे पवित्र ग्रंथों को पढ़ने की स्वतंत्रता नहीं थी, और आम लोगों को पुजारियों के अलावा देवताओं की पूजा करने का कोई अधिकार नहीं था, उच्च आध्यात्मिकता के लिए पुरुषों की इच्छा अधूरी रह गई। जीवन, आत्मा और मोक्ष के निर्माता और सृजन का आंतरिक अर्थ, पुजारियों के अनजाने मंत्रों में डूबा हुआ था, और जानवरों और अंध विश्वासों का वध। अज्ञान, ज्ञान नहीं, वातावरण पर हावी था।ऐसी धार्मिक और सामाजिक बुराइयों के खिलाफ एक प्रतिक्रिया अपरिहार्य हो गई। ऐसे संत और प्रचारक थे, जिन्होंने पुनर्विचार के लिए खुलकर आवाज उठाई। यह इस मानसिक माहौल में था कि प्रबुद्ध प्रगति के युग में जैन और बौद्ध धर्म दो शक्तिशाली धार्मिक आंदोलनों के रूप में उभरे। लंबे समय में, जैन और बौद्ध आंदोलन, विशेष रूप से बौद्ध, ने मानव इतिहास में दूरगामी परिणाम प्राप्त किए।

घर >> इतिहास >> भारत >> नए धार्मिक विचार >> उदय >> नए धार्मिक विचारों का उदय
संबंधित आलेख:

1. भारत में धार्मिक आंदोलन | भारतीय इतिहास
2. 6 वीं शताब्दी ईसा पूर्व के दौरान उत्तर भारत का इतिहास
3. नए धार्मिक आंदोलनों का उदय: 7 कारण
4. चौथी शताब्दी ईस्वी में गुप्तवंश का उदय

| ISSN: 2395-7639| www.ijmrset.com| Impact Factor: 7.580 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

|| Volume 8, Issue 9, September 2021 ||

|DOI:10.15680/IJMRSETM.2021.0801009|

उत्तर वैदिक काल के बाद भारत में अनेक सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक और आर्थिक परिवर्तन हुए , समाज मुख्यत: चार भागो में विभक था,जो पूर्व में कर्म पर आधारित था किंतु कालांतर में यह जन्म के आधारित हो गया , फलस्वरूप 6 वी शताब्दी ई0पू0 में धार्मिक क्रांति का जन्म हुआ। इसका केंद्र मगध था। इस क्षेत्र में इसके भौगोलिक कारणो से वैदिक धर्म का प्रसार नही हो पाया था। तथाआर्यो अनार्यो के मध्य व्यापक सम्बंधो का निर्माण हो रहा था, क्योकि कृषि तथा व्यवसायो के कारण अनार्यो की सेवाए आवश्यक हो गई थी। इस प्रकार के समाज में यज्ञो की जटीलता और आडम्बर के लिये कोई स्थान नही था। वस्तुत: उपनिषदीय विचारधारा उच्च वर्गो तक ही सीमित थी। [2] यह एतिहासिक सन्योग है कि जिस जिस समय भारत में धार्मिक उथल-पुथल चल रहा था ठीक उसी समय विश्व के अन्य क्षेत्रो में- ईरान में जरथुस्त्र ,चीन में कंफ्यूशियस तथा यूनान में पर्मानाइड्स जैसे क्रांतिकारी ,चिंतक और धर्म सुधारक हुये। भारत में भी यह धार्मिक क्रांति का युग था।जो कि युगांतकारी घटना के रूप में क्रमश: जैन धर्म एवम बौध्द धर्म का जन्म हुआ।दोनो धर्मो का उदय अत्यंत तेजस्वी महापुरुषो महावीर स्वामी तथा महत्मा बुध्द की व्यक्तिगत साधनाओ के सामाजिक सम्प्रेष्ण का परिणाम था, लेकिन दोनो ही धर्मो को सहज लोकप्रियता मिली उसके पीछे का कारण तत्कालीन समाज में धर्म का आडम्बरपूर्ण होना माना जाता है।

विचार-विमर्श

धार्मिक आंदोलन के प्रमुख या उदय के कारण-

1.- धर्म की जटिलता-

ऋग्वेदिक धर्म सरल और आडम्बर से मुक्त था। लेकिन धीरे -धीरे धर्म में जटिलता आती गई। कर्मकांड और आडम्बर में वृध्दि हुई। धार्मिक कार्य की दुरुहता के कारण पुरोहित आवश्यक हो गया। साधारण व्यक्तियो के लिए धर्म अगम्य हो गया। उत्तर वैदिक काल में तंत्र- मंत्रो और यज्ञो का इतना विस्तार हो गया था कि सरल व सुगम धर्म की उपासना का स्वरुप लुप्त हो गया। ऐसे समय में 6 वी. शता. ई.पू. में लोग नवीन आडम्बर विहीन धर्म की ओर अग्रसर हुये।

2. - यज्ञ और कर्मकांड-

उत्तर वैदिक काल में तंत्र- मंत्रो और यज्ञो का इतना विस्तार हो गया था कि सरल व सुगम धर्म की उपासना का स्वरुप लुप्त हो गया। अनेक यज्ञ तो महीनो और वर्षो तक चलते रहते थे इनमे प्रमुख -वाजपेय, राजसूय, अश्वमेघ थे तथा यज्ञो म्रन पितृ, ब्रह्म देव यज्ञ थे ।इसी प्रकार पशु बली का प्रचनल भी थाजो अत्यंत खर्चीले होते थे। वेदियो का निर्माण ,मंत्रो का पठन-पाठन ,अनुष्ठान अत्यंत जटिल हो जाने से इसका व्यय कर पाना साधारण जनता के लिये कठिन हो गया था। जो व्यक्ति इन धार्मिक कार्यो का सम्पादन नही कर पाता था उसे अधार्मिक माना जाने लगा था। ऐसी परिस्थिति में नवीन धर्म का उदय मुक्ति का मार्ग खोल दिया।

3.- देववाद का विकृत स्वरूप-

इस काल में धार्मिक क्रांति का कारण बहुदेववाद था। एक देव की पूजा के स्थान पर अनेक देवी-देवताओ को पूजा जाने लगा जिससे लोगो भटकाव की स्थिति का जन्म होने से उनके मन में अविश्वास की भावना पनपने लगी और वे ऐसे मार्ग की तलाश में अग्रसर हुये। जैन धर्म व बौध्द धर्म जनता की आकांक्षाओ को पूरा किया।[3]

4. - ब्राहम्णो का प्रभुत्व-

समाज में ब्राह्मम्णो क बढते हुये प्रभुत्व का विरोध होने लगा था।वैदिक काल के आरम्भ में उनका जीवन सीधा व सरल था,किंतु बाद में गृह सूत्रो में इनके कर्म कांडो से और अधि वर्चस्व समाज में बढ गया जिससे वे ज्यादा अहन्कारी हो गये। उनका त्यागी जीवन अब नही रहा था। इनके विरोध में एक ऐसे वर्ग का जन्म हो गया जो वैदिक धर्म को त्यागकर एक सरल मार्ग को अपनाना चाते थे।

| ISSN: 2395-7639| www.ijmrset.com| Impact Factor: 7.580 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

|| Volume 8, Issue 9, September 2021 ||

|DOI:10.15680/IJMRSETM.2021.0801009|

5. - वर्णो का आपसी संघर्ष-

धार्मिक क्रांति का सामाजिक पक्ष भी था।वर्ण व्यवस्था से समाज में विषमता उत्पन्न हो गई थी।जिससे आपस में सन्घर्ष की स्थिति बनी रहती थी। उत्तर वैदिक काल के बाद भारत में अनेक सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक और आर्थिक परिवर्तन आए , समाज मुख्यत: चार भागो में विभक था,जो पूर्व में कर्म पर आधारित था किंतु कालांतर में यह जन्म के आधारित हो गया फलस्वरूप 6वी शताब्दी ई0पू0 में धार्मिक क्रांति का जन्म हुआ।

6.- आर्थिक कारण-

धर्म सुधार आंदोलन के आर्थिक कारण भी थी। पूर्वी भारत में लोहे के व्यापक प्रयोग के कारण अर्थव्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन हो गया था और एक ववीन आर्थिक जीवन का विकास हो गया था। लोहे के प्रयोग से कृषि उत्पादन उपकरणो का अधिक प्रयोग ने उत्पादन क्षमता को बढा दिया था। और एक नये धनाढय वर्ग के उदय से समाज में निम्न वर्ग का भी जन्म हुआ । अमीर वर्ग के लोग विलासिता व आडम्बर युक्त जीवन जीने लगे । भव्य यज्ञ एवम कर्मकांडो से अतिरिक्त खर्चे का भार उथाने के किये कर का भार बढा दिया गया । जिससे आम जनता विरोध करने लगी।

7. - बौध्दिक कारण-

ऋग-वैदिक काल की पहले की धार्मिक सादगी और सामाजिक समानता अब नहीं थी। बाद के वैदिक समय से, धर्म ने अपने आंतरिक पदार्थ को कभी भी बढ़ती बाहरी प्रथाओं में खो दिया। डोगमा और अनुष्ठान अधिक कठोर हो गए। कई देवी-देवताओं को धार्मिक विश्वास में प्रकट किया गया था। अंधविश्वास ने आध्यात्मिकता को छिन्न-भिन्न कर दिया तब ऐसी धार्मिक और सामाजिक बुराइयों के खिलाफ एक प्रतिक्रिया अपरिहार्य हो गई। ऐसे संत और प्रचारक थे, जिन्होंने पुनर्विचार के लिए खुलकर आवाज उठाई। यह इस मानसिक माहौल में था कि प्रबुद्ध प्रगति के युग में जैन और बौद्ध धर्म दो शक्तिशाली धार्मिक आंदोलनों के रूप में उभरे। लंबे समय में, जैन और बौद्ध आंदोलन, विशेष रूप से बौद्ध, ने मानव इतिहास में दूरगामी परिणाम प्राप्त किए।[4]

परिणाम

- छठी सदी ई.पू. के उत्तरार्द्ध में मध्य गंगा के मैदानों में अनेक धार्मिक सम्प्रदायों का उदय हुआ जिनमें जैन और बौद्ध सर्वाधिक महत्वपूर्ण सम्प्रदाय थे।इस दौर में नए धर्मो के उदय के पीछे कई कारण विद्यमान थे किंतु 'पूर्वोत्तर भारत में नई कृषिमूलक अर्थव्यवस्था का विस्तार' सबसे प्रमुख कारण था।

जैन धर्म

- जैन परम्परा के अनुसार उनके धर्म में 24 तीर्थकर हुए है जिनमें ऋषभदेव प्रथम, पार्श्वनाथ 23वें तथा महावीर 24वें तीर्थकर थे।पार्श्वनाथ के पूर्व के तीर्थकरों की ऐतिहासिकता संदिग्ध है हालाँकि ऋषभदेव तथा अरिष्टनेमि का उल्लेख ऋग्वेद में है।वर्धमान महावीर का जन्म 540 ई.पू. मे वैशाली के कुण्डग्राम में हुआ उनके पिता 'सिद्धार्थ' क्षत्रिय कुल के प्रधान थे तो माता 'त्रिशला' लिच्छवी नरेश चेटक की बहन थी।महावीर ने 30 वर्ष की अवस्था में गृहत्याग कर दिया तथा 12 वर्षो की कठिन तपस्या के के बाद जुम्भिकग्राम के समीप उन्हें 'कैवल्य' की प्राप्ति हुई।बौद्ध साहित्य में महावीर को निगण्ठ-नाथपुत्त कहा गया है।ज्ञान प्राप्ति के बाद महावीर केवलिन, जिन (विजेता), अर्ह (योग्य), निर्ग्रथ (बंधन रहित) कहलाए।जैन धर्म कर्मवाद पर आधारित था तथा कठिन तप पर विश्वास करता था।जैन धर्म के 'आचरांग सूत्र' में महावीर के कठिन तप का वर्णन किया गया है।जैन धर्म के पाँच व्रत हैं- अहिंसा (हिंसा न करना), अमृषा(झूठ न बोलना), अचौर्य(चोरी न करना), अपरिग्रह (सम्पति अर्जित नहीं करना) तथा ब्रम्हाचर्य (इंद्रिय निग्रह करना)। शुरूआत के चार व्रत पार्श्वनाथ के समय से चले आ रहे थे तथा पाँचवा व्रत महावीर ने जोड़ा।जैन भिक्षुओं के लिए पंच महाव्रत तथा गृहस्थों के लिए पाँच अणुव्रत की व्यवस्था हैं।जैन धर्म में देवताओं का अस्तित्व स्वीकार किया गया है किंतु उनका स्थान जिन से नीचे रखा गया है।महावीर के अनुसार पूर्वजन्म में अर्जित पुण्य या पाप के अनुसार ही किसी का जन्म उच्च या निम्न कुल में होता है। साथ ही उनके अनुसार शुद्ध व अच्छे आचरण वाले निम्न जाति के लोग भी मोक्ष पा सकते हैं।जैन धर्म में मुख्यत: सांसरिक बंधनों से छुटकारा पाने के उपाय बताए गए हैं जो सम्यक् ज्ञान, सम्यक् ध्यान और सम्यक आचरण से प्राप्त किया जा सकता है। इसे ही जैन

| ISSN: 2395-7639| www.ijmrset.com| Impact Factor: 7.580 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

|| Volume 8, Issue 9, September 2021 ||

|DOI:10.15680/IJMRSETM.2021.0801009|

त्रिरत्न कहा गया है।जैन धर्म में युद्ध व कृषि दोनो वर्जित हैं क्योंकि इससे हिंसा होती है। हालाँकि जैन धर्म में वर्ण व्यवस्था की उतनी कठोर निंदा नहीं है जितनी बौद्ध धर्म में है।जैन धर्म पुनर्जन्म में विश्वास करता हे। उनके अनुसार पूर्व जन्म के कर्म के अनुसार ही किसी का जन्म उच्च या निम्न कुल में होता है।जैन धर्म के अनुसार सृष्टि शाश्वत है तथा यह 6 तत्वों जीव, धर्म, अधर्म, आकाश, काल तथा पुद्गल (सांसारिक कार्य) से मिलकर बनी है।

जैन धर्म अनीश्वरवादी है तथा इसका विश्वास है कि ये संसार त्याज्य है। इस हिसाब से इसे निवृत्तिमूलक धर्म कहा जाता है।जैन धर्म मोक्ष से संबधित आस्रव (जीव का कर्म की ओर आकर्षण), संवर (जीव का कर्म से मोहभंग) तथ निर्जरा (विद्यमान कर्म का क्षय हो जाना) शब्दावलियाँ मिलती हैं। निर्जरा कें अंतर्गत ही संथारा या सल्लेखना पद्धिति आती है।स्यादवाद या सप्तीभंगनीय जैन धर्म का महत्वपूर्ण दर्शन है जो 'ज्ञान की सापेक्षिकता' की बात करता है।कालांतर मं जैन धर्म दो सम्प्रदायों में बँट गया- श्वेताम्बर (सफेद वस्त्र धारण करने वाला) तथा दिगंबर (नग्न रहने वाला)।एक परंपरा के अनुसार महावीर के निर्वाण के 200 वर्षो बाद मगध में भारी अकाल पड़ा। फिर प्राण बचाने बहुत से जैन बाहुभद्र के नेतृत्व में दक्षिण चले गए। ये दक्षिणी जैन दिगंबर कहलाए तथा जो स्थलबाहु के नेतृत्व में मगध में ही रह गए जैन श्वेताम्बर हलाएं।श्वेताम्बर परम्परा के अनुसार 19वें तीर्थकर 'मल्लिनाथ' स्त्री हैं जबकि दिगंबर इन्हें पुरूष मानते है।यद्यपि जैन धर्म आरंभ में मर्तिपूजक नहीं था किंतु बाद मतें लोग महावीर और अन्य तीर्थकरों की पूजा करने लगे।प्रथम जैन संगीति गुजरात के वल्लभी नामक स्थान पर देवर्धि क्षमाश्रवण की अध्यक्षता में सम्पादित हुई। इसी सम्मेलन में प्राकृत भाषा में जैन में जैन ग्रंथो का संकलन हुआ।जैन धर्म का प्राचीनतम साहित्य 'पूर्व' कहलाता है जिसकी संख्या 14 थी। कालांतर में इसका संकलन 'आगम' के रूप में हुआ जिसकी संख्या 46 है।[5]

बौद्ध धर्म

गौतम बुद्ध का जन्म 563 ई.पू. में शाक्य क्षत्रिय कुल में कपिलवस्तु के निकट लुंबिनी में हुआ गौतम के पिता शुद्धोधन गणतांत्रिक शाक्यों के प्रधान थे तथा उनकी माता महामाया कोसल राजवंश से संबद्ध थी। इस प्रकार महावीर की तरह बुद्ध भी उच्च कुल के थे।29 वर्ष की अवशस्था में बुद्ध ने महाभिनिष्क्रमण (गुह त्याग) कर दिया तथा 35 वर्ष की अवस्था में उन्हें निर्वाण (ज्ञान) प्राप्त हुआ।उन्होने अपना प्रथम उपदेश, जिसे धर्मचक्रप्रवर्तन कहते है, सारनाथ में दिया।महात्मा बुद्ध के उपदेशों में व्यावहारिकता अधिक है। उन्होंने चार आर्य सत्यों का प्रतिपादन किया- (i) दु-ख (ii) दु:ख समुदाय (iii) दु:ख निरोध (iv) दु:ख निरोध गामिनी प्रतिपदा। चौथे आर्य सत्य के अंतर्गत ही आष्टांगिक मार्ग की अवधारणा दी गई है। बुद्ध, धम्म तथा संघ बौद्ध त्रिरत्न है।बुद्ध के अनुसार लोग काम(इच्छा, लालसा) के कारण दु:ख पाते है। काम पर विजय पाई जाए तो निर्वाण प्राप्त हो जाएगा।बौद्ध धर्म ईश्वर और आत्मा में विश्वास नहीं करता है इसलिए इसे अनीश्वरवादी और अनात्मवादी कहा गया है।बौद्ध धर्म पुनर्जन्म में विश्वास करता है किंतु यहाँ पुनर्जन्म का संदर्भ चेतना से लिया जाता है।कई मायनों में बौद्ध धर्म को 'आशावादी' कहा जाता है।प्रतीत्यसमुत्पाद अर्थात् कारणता का सिद्धात का अर्थ है किसी वस्तु के होने पर किसी अन्य वस्तु की उत्पति होती है।बौद्ध सिद्धांत क्षण भंगवाद के अनुसार सृष्टि नश्वर है।बौद्ध धर्म 'प्रयोजनवादी' है। अर्थात् यह पारलौकिक जीवन के बजाय 'इहलौकिक' जीवन पर अधिक बल देता है।बौद्ध धर्म में वर्ण व्यवस्था की कटु आलोचना की गई है तथा संघ में सभी वर्णा तथा स्त्रीयों का प्रवेश स्वीकार किया गया।हालाँकि संघ में प्रवेश के लिये बच्चों को अपने माता-पिता से, दासों को अपने स्वामी से, कर्जदारों को देनदारों से तथा स्त्री को अपने पति से अनुमति लेनी होती थी।बौद्ध भिक्षु वर्षा काल के दिनों में एक ही स्थान पर रहते थे जिसे वस्सस कहा जाता था। इसके बाद पवारना के तहत यह पूछा जाता था कि उन्होंने कोई पाप तो नहीं किया है।

महाजनपद काल

ईसा पूर्व छठी सदी से पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा पश्चिमी बिहा में लोहे के व्यापक प्रयोग ने बड़े-बड़े प्रादेशिक राज्यों के निर्माण को प्रोत्साहित किया।लोहे के हथियारों के इस्तेमाल ने 'योद्धा-वर्ग' की भूमिक को महत्वपूर्ण बना दिया।बौद्ध ग्रंथ 'अंगुत्तर निकाय' से 16 महाजनपदों का प्रमाण मिलता हैं। जैन ग्रंथ 'भगवती सूत्र' में भी महाजनपदों की चर्चा है।15 महाजनपद उत्तर भारत में स्थित थे तथा एक महाजनपद अश्मक नर्मदा नदी के दक्षिण में था।दीघ निकाय में वर्णन मिलता है कि वज्जि एवं मल्ल महाजनपद में गणतंत्रात्मक शासन व्यवस्था प्रचलित थी।इस काल में चम्पा, राजगृह, श्रावस्ती, साकेत, काशी तथा कौशाम्बी 6 महानगर थे।यह काल द्वितीय नगरीकरण के नाम से जाना जाता है। पहला नगरीकरण (हड़प्पा सभ्यता) जहाँ से कांसे से जुड़ा था वहीं दूसरा नगरीकरण लौह धातु से जुड़ा था।इस काल में मौद्रिक अर्थव्यस्था मौजूद थी तथा चाँदी के सिक्के आहत के नाम से प्रचलित थे।इन महानगरों में मगध, कोसल, वत्स तथा अवंति अधिक शक्तिशाली थे।यह काल इन महाजनपदों के आपसी टकराव का युग था जिसमें अंतत: मगध राज्य शक्तिशाली होकर उभरा।

| ISSN: 2395-7639| www.ijmrset.com| Impact Factor: 7.580 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

|| Volume 8, Issue 9, September 2021 ||

|DOI:10.15680/IJMRSETM.2021.0801009|

मगध साम्राज्य

हर्यक वंश (544 ई.पू- 412 ई.पू) के अधीन मगध साम्राज्य शक्तिशाली होकर उभरा।हर्यक वंश का प्रथम शासक बिंबिसार (544 ई.पू.) था।बिंबिसार ने अंग पर अधिकार कर उसका शासन अपने पुत्र अज्ञातशत्रु को शौंप दिया।बिंबिसार नें वैवाहिक संबंध द्वारा भी साम्राज्य को मजबूत किया। उसने कोसलराज की पुत्री तथा प्रसेनजीत की बहन से विवाह कर दहेज में काशी प्राप्त किया।दूसरा विवाह उसने वैशाली की लिच्छवि राजकुमारी चेल्लणा से किया जसने अज्ञातशत्रु को जन्म दिया। तीसरा विवाह उसने मद्र कुल के प्रधान पुत्री से किया।मगध की असली शत्रुता अवंति से थी जिसके राजा चंडपघोत महासेन थे। बाद में दोनो में मित्रता हो गई तथा प्रघोत की चिकित्सा के लिए बिंबिसार ने अपने राजवैद्य जीवक को भेजा।मगध की पहली राजधानी राजगीर थी जिसें गिरिव्रज कहा जाता था।अपने पिता की हत्या कर अज्ञातशत्रु मगध की गद्दी पर बैठा। इसे 'कुणिक' कहा गया।अज्ञातशत्रु ने रथमूसल तथा महाशिलाकंटक जैसे हथियारों का प्रयोग युद्ध के दौरान किया।अज्ञातशत्रु ने लम्बे संघर्ष के बाद काशी तथा वज्जि को अपने साम्राज्य में मिला लिया।बस्सकार अज्ञातशत्रु का मंत्री था।अज्ञातशत्रु के पुत्र उदयिन ने अपने पिता की हत्या कर साम्राज्य पर अधिपत्य स्थापित किया।उदयिन ने पाटिलपुत्र की स्थापना की तथा उसे अपनी राजधानी बनाया।इस वंश का अंतिम शासक नागदशक था जिसे उसके अमात्य शिशुनाग ने मारकर शिशुनाग वंश की स्थापना की।शिशुनाग ने अवन्ति तथा वत्स राज्य पर अधिकार कर लिया। शिशुनाग ने वैशाली को अपनी दूसरी राजधानी बनाया।इस वंश का अंतिम शासक नंदिवर्धन (महानन्दिन) था।शिशुनागों के बाद मगध पर शक्तिशाली नंद वंश का शासन प्रारंभ हुआ जिसका संस्थापक महापद्मनंद था।महापद्मनंद को सर्वक्षत्रान्तक तथा द्वितीय परशुराज (भार्गव) कहा गया।विशाल साम्राज्य स्थापित करने के कारण इसने एकराज और एकछत्र की उपाधि धारण की।उसने कलिंग तथा कोसल को बलपूर्वक हथिया लिया।धनानंद इस वंश का अंतिम शासक था जिसे यूनानी विवरण में अग्रमीज कहा गया है। घनानंद सिकंदर का समकालीन था।कहा जाता है कि नंदो की सेना से भयभीत होकर सिकंदर ने भारत पर आक्रमण नहीं किया।आगे चंद्रगुप्त मौर्य ने चाणक्य की सहायता से धनानंद की हत्या कर दी तथा इस प्रकार मगध पर मौर्य वंश का शासन स्थापित हुआ।[5]

निष्कर्ष

लगभग 600 ई.पू. भारत में एक धार्मिक आन्दोलन उठ खड़ा हुआ जिसने भारतीय जनमानस को बौद्धिक रूप से आन्दोलित कर दिया। ईसा पूर्व छठी सदी का काल बौद्धिक चिंतन का युग माना जाता है। इस काल में यूनान में पाइथागोरस, ईरान में जरथ्रुष्ट, चीन में कन्फूसियस और लाओत्से और भारत में बुद्ध और महावीर जैसे चिंतक हुए। इस काल में परंपरागत लौकिक धर्म अपनी गति से चल रहा था और इसमें इंद्र देवता को प्रधान माना जाता था। उसे शक्र और मधवा कहा जाता था। बौद्ध ग्रंथ में ब्रह्मा (बम्मा) का भी उल्लेख है। रूद्र शिव के रूप में जाने जाते थे। पाणिनी ने वासुदेव संप्रदाय की चर्चा की है जो भागवत धर्म से जुड़ा हुआ था। महाभारत में भी कृष्ण पूजा का उल्लेख है। उनके भाई बलदेव (लांगुलिन) के नाम का उल्लेख है। जैन ग्रन्थ में स्कंदकी चर्चा है जो शिव के पुत्र थे। इस युग में भी नाग पूजा की चर्चा होती है। गरुड़ पूजा भी प्रचलित थी। बौद्ध और जैन ग्रंथों में यक्ष पूजा के भी दृष्टांत मिलते हैं। यक्षों के राजा को वेसवन कहा जाता था। उदार एवं परोपकारी यक्ष मणिभद्र था।[5]

छठी शताब्दी ईसा पूर्व उत्तर भारत के गांगेय प्रदेश (पूर्वी उत्तर प्रदेश एवं बिहार) के जनजीवन में सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से नगरीयकरण, शिल्प समुदाय के विस्तार, व्यवसाय और वाणिज्य में तीव्र विकास, तत्कालीन धर्म एवं दार्शनिक चिन्तन में होने वाले परिवर्तनों से घनिष्ठ रूप से सम्बद्ध थे। परम्परागत रूढ़िवादिता एवं नगरों में उभरते नये वर्गों की आकांक्षाओं में होने वाले संघर्ष ने इस प्रक्रिया को गतिशील बनाया होगा जिससे चिन्तन के क्षेत्र में ऐसी एक नवीन शक्ति एवं अद्‌भुत सम्पन्नता का आविर्भाव हुआ जिसने भारत ही नहीं विश्व के बड़े जनसमुदाय को प्रभावित किया। इस बौद्धिक गतिविधि का केन्द्र मगध था। मगध में इस काल में एक विशाल साम्राज्य की नींव भी पड़ रही थी।

इस आन्दोलन के कई प्रत्यक्ष एवं परोक्ष कारण थे जो तत्कालीन सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक परिवर्तनों में निहित थे। कुछ विद्वानों ने सामाजिक स्तर पर आर्य-अनार्य, ब्राह्मण-क्षत्रिय तथा परम्परागत वर्ण व्यवस्था एवं विभिन्न जातियों में परस्पर संघर्ष की कल्पना की है। वैदिक आर्य नितान्त प्रवृत्तिमार्गी थे, वे सदैव श्रेष्ठ धन एवं ऐश्वर्य की कामना करते थे। इस विचारधारा के प्रति विरोध का आभास समाज के एक प्रबुद्ध वर्ग में रिग्वेग कल से ही देखने को मिलता है जिसकी अभिव्यक्ति एकेश्वरवादी धरना में देखि जाती है। प्रगार्य इस निवृत्तिमूलक विचारधारा के प्रणेता थे, ऐसी कुछ विद्वानों की धारणा है।

एक बौद्ध ग्रंथ में विशुद्ध यज्ञ की चर्चा मिलती है, राजा महाविजित के यज्ञ में गायें नहीं मारी गई, बकरी-भेड़े नहीं मारी गई, मुर्गे-सूअर नहीं काटे गये, न नाना प्रकार के प्राणियों की ही हत्या की गई। घी, तेल, मक्खन, दही, मधु और गुड़ से ही यज्ञ समाप्त हुआ। मज्झिमनिकाय में उल्लेख आया है कि में यज्ञ प्रक्रिया सरल थी। अट्ठक आदि ऋषियों ने हिंसाविहीन मंत्रों की रचना की थी किंतु परवर्ती ब्राह्मणों ने प्राणी हिंसा का प्रावधान किया। बौद्ध साहित्य में रुधिर होम के विवरण भी मिलते हैं।

| ISSN: 2395-7639| www.ijmrset.com| Impact Factor: 7.580 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

|| Volume 8, Issue 9, September 2021 ||

|DOI:10.15680/IJMRSETM.2021.0801009|

जैन एवं बौद्ध धर्म के अभ्युत्थान से पूर्व (छठी शताब्दी ईसा पूर्व) अनेक मतमतान्तरों का प्रादुर्भाव हो रहा था। किंतु यह युग मुख्य रूप से निवृतिवादी विचारधारा से विशेषत: दिखाई पड़ता है। इस युग में क्रान्तिकारी सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक परिवर्तन भी हुए। दूसरी ओर धार्मिक क्षेत्र में घटित परिवर्तनों को सर्वथा असम्बद्ध नहीं कहा जा सकता। जहाँ कुछ लोगों ने सहज आध्यात्मिक प्रेरणा से निवृतिवादी धर्म को स्वीकार किया होगा वहीं अन्य लोगों ने सामाजिक हीनता तथा आर्थिक कठिनाइयों से मुक्ति पाने का मार्ग पाया होगा। कठिन सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियों से त्रस्त लोगों का ऐसे धार्मिक आन्दोलनों की ओर आकर्षित होना स्वाभाविक था जिसमें इन कठिनाइयों से मुक्ति के उपाय निहित हों। इस प्रकार महावीर एवं बुद्ध द्वारा प्रवर्तित जैन एवं बौद्ध धर्म का उदय इस युग की महत्त्वपूर्ण घटना है। बुद्ध और महावीर के अलावा इस युग में कई चिंतक हुए जिन्होंने इस धार्मिक आन्दोलन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। बौद्ध ग्रंथों के अनुसार, जहां इस काल में 62 धार्मिक संप्रदाय अस्तित्व में थे, वहीं जैन ग्रंथ सूत्र कृतांग के अनुसार, कुल धार्मिक संप्रदायों की संख्या 363 थी।

अजित केशकंबीलन– भारत का सबसे पहला भौतिकवादी चिंतक अजित केशकंबीलन था। अजित केशकंबीलन ने एक पक्के भौतिकवादी चिन्तन का प्रचार किया। उनका मानना था कि अच्छे या बुरे कर्मों का कोई फल नहीं होता। आदमी चाहे जो करे उसका सार भूत में विलीन हो जाता है। दान या दया का मनुष्य की नियति से कोई संबंध नहीं होता। उसका मानना था कि प्रत्येक घटना अपने स्वभाव के अनुरूप होती है। अत: जो इच्छा है वही करो। इसे यदृच्छावादी कहा गया है। आगे चलकर इससे लोकायत दर्शन का विकास हुआ। इसका प्रतिपादक चार्वाक था।

पुरण कश्यप- सुमंगल विलासिनी के अनुसार, वह एक दास पुत्र था जो अपने स्वामी के घर से भाग गया था। एक बौद्ध जनश्रुति के अनुसार, उसने बुद्ध के परिनिर्वाण के 16वें वर्ष में श्रावस्ती के निकट जलसमाधि ले ली। उसका मानना था कि- न तो कर्म होता है और न पुनर्जन्म। उसे अक्रियावादी कहा जाता है। संभवत: पुरण कश्यप ने ही सांख्य दर्शन की नींव डाली। इसके अनुसार आत्मा शरीर से पृथक है। आगे चलकर पुरण कश्यप के संप्रदाय का मक्खलि गोशाल के संप्रदाय में विलय हो गया।

मक्खलि गोशाल- वह छः वर्षों तक महावीर के साथ रहा। फिर उसने आजीवक संप्रदाय की स्थापना की। कुछ पुस्तकों में इसका संस्थापक नंदवच्छ को माना गया है। मक्खलि गोशाल का मत था कि आत्मा को अनेकानेक पुनर्जन्मों के पूर्व निर्धारित अटल चक्र से गुजरना ही पड़ता था और फिर प्रत्येक जन्म में वह जिस शरीर से संबंधित होता है वह होगा ही, चाहे उसने कर्म कैसा भी क्यों न किया हो। उसे नियतिवादी कहा जाता है। बिंदुसार ने इस धर्म को संरक्षण दिया और अशोक एवं दशरथ ने इसे गुफाएं प्रदान कीं।

पकुध कात्यायन- यह भी नियतिवादी था। वह भी कर्म और पुनर्जन्म में आस्था नहीं रखता था। उसके विचार में सात वस्तुएं पृथ्वी, जल, तेज, वायु, सुख, दुख और जीव न तो पैदा किए जा सकते हैं और न ही नष्ट। अत: न तो संसार में कोई किसी को मारता है और न ही कोई मारा ही जाता है। अत: यदि कोई किसी को हथियार से काटे भी तो वह नहीं कटता है। इससे परवर्ती वैशेषिक दर्शन का उद्गम माना जा सकता है। इस धर्म के अनुयायी मक्खलिपुत्र गोसाल के संप्रदाय से जुड़ गए।

संजय वेलट्ठपुत्त- इसे अनिश्चयवादी भी माना जाता है। इसका मानना है न तो यह कहा जा सकता है कि स्वर्ग या नरक हैं, या फिर नहीं हैं।

चार्वाक- उसे बृहस्पति का शिष्य माना जाता है और उसने बृहस्पति सूत्र (ग्रंथ) भी लिखा है। चार्वाक, भौतिकवादी दार्शनिक है। उसका मानना है कि प्रत्यक्ष अनुभव ही एक मात्र ज्ञान का साधन है। पृथ्वी, जल, अग्नि और वायु के रूप में, अचेतन अवस्था में प्राप्त, द्रव्य एकमात्र वास्तविकता है। भौतिक तत्वों से बना शरीर मानव का एक मात्र सार है। राजा एक मात्र देवता है। मृत्यु मानव का एक मात्र अन्त है। ऐन्द्रिक आनन्द ही जीवन का एक मात्र उद्देश्य है। मृत्यु के बाद न तो स्वर्ग है और न नरक। इसलिए कर्म और पुनर्जन्म अपना अर्थ नहीं रखता है।

संभवत: इन अतिवादी तथा सामाजिक नैतिकताविहीन चिंतन में कार्य कारण सम्बंधी प्रकृति के नियम की धारणा कार्य कर रही थी, जिससे इस विचार का विकास हुआ कि प्रकृति में सदैव कार्य कारण सम्बन्ध कार्यरत है, जिसे न ईश्वर ही बदल सकता है न कर्मकाण्ड या यज्ञों से ऐसा संभव है। इस विचारधारा का विकास उपनिषदिक चिंतन के साथ ही हुआ होगा जो छठी शताब्दी ईसा पूर्व में नास्तिकवादी सम्प्रदायों का प्रेरक बन गया।[5]

| ISSN: 2395-7639| www.ijmrset.com| Impact Factor: 7.580 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

|| Volume 8, Issue 9, September 2021 ||

|DOI:10.15680/IJMRSETM.2021.0801009|

संदर्भ

1. "'नवबौद्ध' संकल्पना चुकीची". Maharashtra Times. 12 फ़र॰ 2017. मूल से 29 मई 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 29 मई 2019. ।
2. ↑ "नव बौद्धो□ क□ लाभ देन□ क□ लिए जात□ प्रमाणपत्र क□ प्रारूप मे□ बदलाव लाएग□ सरकार ". Navbharat Times. 22 जून 2016. मूल स□ 5 अगस्त 2018
3. ↑ "Buddhism has brought literacy gender equality and well being to Dalits (in Hindi)". मूल से 1 अगस्त 2018 को पुरालेखित.
4. ↑ Moudgil, Manu (1 जुल॰ 2017). "Conversion To Buddhism Has Brought Literacy, Gender Equality And Well-Being To Dalits". मूल से 29 मई 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 29 मई 2019.
5. ↑ मउदगिल, मन□. "भारतीयो□ क□ बौद्ध धर्म अपनान□ जार□, लेकिन परिवर्तन दर कम | IndiaSpend". मूल स□ 24 मार्च 2019 क□ पुरालेखित. अभिगमन तिथ□ 29 मई 2019.

Impact Factor: 7.580

INTERNATIONAL JOURNAL
OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH
IN SCIENCE, ENGINEERING, TECHNOLOGY AND MANAGEMENT

+91 99405 72462 +91 63819 07438 ijmrsetm@gmail.com